विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 12, वर्ष 6, अंक 71 माह - नवंबर, 2024, मूल्य : नि:शुल्क

विचार हथकरघा केंद्र में ताना मशीन में सूती धागा भरते हुए महिलाएं

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक अध्यक्ष

सुनीता अरिहंत
कार्यकारी अध्यक्ष

सौरभ रांधेलिया
अध्यक्ष

आकांक्षा मलैया
सचिव

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

रानेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयाँश जैन
मार्गदर्शक

अनिल अवस्थी
मार्गदर्शक

गुलज़ारी लाल जैन
मार्गदर्शक

अर्चना रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

डॉ. स्वप्निल बी. मंत्री
मार्गदर्शक

- सक्सेस स्टोरी -

स्वदेशी मेला के अंतर्गत आत्मनिर्भरता की दिशा में बढ़ रहीं उद्यमी की कहानी

समर्पण और लगन से किसी काम को करें तो सफलता निश्चित मिलती है : अंशु सागर

बुटिक की दुकान में महिलाएं सामग्री खरीदते हुए।

जब हम किसी काम में असफल होते हैं, तो अक्सर समय या उम्र को दोष देने लगते हैं, यह कहकर कि "समय कम था" या "उम्र ने बाधा खड़ी कर दी"। लेकिन सच्चाई यह है कि यदि हम पूरे समर्पण और लगन से किसी काम को करने का निश्चय करें, तो न समय की कमी कोई बाधा बनती है, न ही उम्र। अंशु सागर एक उदाहरण हैं जो हमें सिखाती हैं कि असफलताओं के बावजूद कभी हार न मानें। समय और उम्र से परे, अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण और मेहनत से किसी भी उम्र में सफल हो सकते हैं। उनकी इस यात्रा की शुरुआत बहुत पहले हो चुकी थी आइए जानते हैं क्या है पूरी कहानी।

अंशु सागर का जन्म मेरठ, उत्तरप्रदेश में 24 नवम्बर 1970 को हुआ था। अंशु के पिता प्रयागराज (इलाहाबाद) में एम.पी.ई.बी. में सेक्शनल आफिसर के पद पर कार्य करते थे। माँ गृहणी है। अंशु तीन बहनें एक भाई के साथ पली-बढ़ीं। शिक्षा बी. एच. एस. सी. एवं एम. एच.

एस. सी. विषय में बाल मनोविज्ञान से की। दो बार मेरिट लिस्ट में शामिल रही। 20 वर्ष की उम्र में नौकरी की और बी. एड की। अंशु कहती है कि 24 साल की उम्र में विवाह सुनील सागर जी के साथ हुआ। अंशु सुनील सागर के दो बच्चे है अनिकेत सागर सिविल इंजीनियर है, बेटी सान्या ने फैशन डिजायनिंग में उपाधि ली है एवं मेकअप आर्टिस्ट है।

बुटीक की शुरुआत क्यों की - अंशु सागर कहती है कि शादी होने के पहले में जॉब करती थी। शादी के बाद जॉब करने की अनुमति नहीं मिली। मैं पारिवारिक व्यवसाय में मदद करती थी। कोविड काल में बच्चे घर वापिस आ गए थे। बेटी मेकअप आर्टिस्ट थी। लेकिन उसके पास आनलाइन ऐसा कुछ नहीं था जो वह यहां आकर कर सके, तो हमने सोचा क्यों न हम यहीं पर कुछ करते हैं। मुझे सिलाई-कढ़ाई शुरू से ही बहुत अच्छी आती थी। हम सभी का अपना शौक होता है जैसे मेरा बहुत मन होता कि लोगों की मदद करूं, लेकिन जब तक आपका खुद का कुछ नहीं होगा आप कैसे मदद कर सकते हैं। मेरे मन में था कि मेरे पास मेरा स्वयं का पैसा हो ताकि उसे खर्च करने से पहले किसी से पूछना ना पड़े। यह मेरे स्वभाव में था। जब मैं लाइंस क्लब से जुड़ी तो मुझे बहुत से लोगों की मदद करने का अवसर मिला।

बुटीक खोलते समय क्या कठिनाई आई - हम बुटीक के लिए जगह देख रहे थे। सागर में कई जगह देखी। छोटी-छोटी जगह के लिए 10 से 12 हजार रुपए रेन्ट लग रहा था। फिर उसमें मशीन कहां रखें, सामान कहां रखें यह समस्या थी। शोरूम के बाजू की दुकान में हमने बुटीक की शुरुवात की। सभी लोग अपने घर से काम करते थे। हमने और आगे काम बढ़ाने की तैयारी की। पांच से छः मशीनों के साथ काम चालू किया। सिलाई कारीगर अच्छा काम करने लगे। सभी कारीगरों को अच्छा रोजगार मिला। वह मासिक रूप से 30,000 रुपए तक कमा लेते हैं। उन सभी के भाग्य से अच्छी सिलाई मिल जाती है। हम बहुत अच्छा काम करके देते हैं। सभी कारीगरों की भी जीवन शैली में बहुत बदलाव आए। ईश्वर ने मुझे किसी के लिए कुछ अच्छा करने का जरिया बनाया, यह मेरे लिए बहुत है।

भविष्य में आप बुटीक को कहां देखते हैं - मैं चाहती हूं कि जो कटिंग का कपड़ा बचता है उससे भी बहुत सुंदर चीज बनाई जाए। यह सिलाई करने वाले लड़के-लड़कियां सीखें और स्वयं का व्यवसाय शुरू करें। मैं अपने उत्पादों का एक ब्रांड बनाना चाहती हूँ। नए उत्पादों पर कार्य करना चाहती हूँ। हमारे उत्पाद मार्केट से एकदम अलग है। कपड़ा और डिजाइनिंग हम अपना देते हैं। गुणवत्ता का ध्यान हम वैसे ही रखते है जैसा हम अपने स्वयं के लिए सिलवा रहे हैं। एक-दो दिन लेट जरूर हो जाए लेकिन हम अपना बेस्ट देते हैं।

आज के युवाओं के लिए आपके क्या विचार है - मोबाइल के कारण आज युवाओं ने बहुत कुछ गवा दिया है। जो भी काम कर रहे हैं उस पर उनका ध्यान ही नहीं रहता तो वह बेहतर और कैसे सीख सकते हैं। परिश्रम की आदत डालें, हम परिश्रम करते ही नहीं, आदत ही नहीं है। काम खुद का करो और स्वयं करो। परिश्रम ही ईश्वर है, जब हम परिश्रम करते हैं तो सफलता अपने आप मिलती है। अगर आप परिश्रम ही नहीं करेंगे तो सफलता कहां से मिलेगी। आप कछुआ की चाल भी चलेगे तब भी आपको सफलता मिल जाएगी, नहीं तो आज के बच्चे खरगोश की चाल से तो चलते हैं लेकिन लक्ष्य के अभाव में खाई में गिर जाते हैं। लक्ष्य को लेकर चलें। आज में 52 वर्ष की हूँ मैंने तीन वर्ष पहले ही बुटीक की शुरुवात की थी। मुझे हमेशा से रहा कि में कुछ न कुछ जरूर करुँगी और आज कर रही हूं।

तीन दिवसीय रेज़िन आर्ट कार्यशाला का आयोजन किया गया

तीन दिवसीय रेज़िन आर्ट कार्यशाला में विचार समिति ने गोमय उत्पाद से एकता जैन का सम्मान किया।

भारत पट्रोलियम, विचार समिति, वैश्य महासम्मेलन, समय सारथी सागर जिला, पट्रोलियम डीलर्स एसोसियन, अखिल भारत वर्षीय दिगंबर जैन महिला परिषद, रंग के साथी सहयोगी संस्थाओं के माधयम से एस. टी. कोमलचंद पेट्रोल पम्प सिविल लाइन में तीन दिवसीय रेज़िन आर्ट कार्यशाला का आयोजन सागर शहर में पहली बार किया गया। इस अवसर पर विचार समिति अध्यक्ष कपिल मलैया ने कहा यह अनूठी कला हैं। बच्चों को सीखनी चाहिए। समिति उपाध्यक्ष सौरभ रांधेलिया ने जानकारी देते हुए कहा कि एक साथ एक साथ 15 प्रतिभागी एक कला को सीख सकते है। वर्कशॉप में मंत्रा फ्रेम, 3डी ओसियन बीच आर्ट, लग्जरी वील क्लॉक आदि बनाना सिखाया जायेगा।

अवार्ड विनिंग रिकॉर्ड होल्डर एकता जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि दुनिया में केवल दो प्रतिशत लोग ही होते है जो अपने दोनों हाथो से लिख सकते है या कलात्मक कृतियाँ उकेर सकते है। यह कला भगवान की दी हुई है। मैं 2017 से लगातार इस कला का अभ्यास कर रही हूँ। उसी समय मैंने लाइव डेमोस्टन दिया था जो इंडिया बुक ऑफ रिकॉड में शामिल हुआ। रेजिन आर्ट से मार्डन हाई क्लास आर्ट होता है। इस आर्ट को बहुत पसंद किया जाता है। कुल वॉशेबल, टेबिल टॉप डिजायन होते है। यहाँ पर ओसन बीच, वील क्लॉक, मंत्रा आदि को कैसे तैयार करते है सिखाया जायेगा। दीपावली के अवसर पर आप अपने घर को सजाकर सुन्दर बना सकते है। रेजिन आर्ट कला को सीखकर व्यवसायिक रूप से भी शुरू किया जा सकता है। हम सभी को जीवन में तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए। हमेशा अभ्यास करते रहें, सब्र रखें, नई चीजें सीखते रहें। कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत, कोषाध्यक्ष विनय मलैया, मंजू मगन, प्रीति जैन, संध्या रांधेलिया, अंशुल भार्गव आदि उपस्थित थे।

विचार समिति ने दिवाली पर महार रेजिमेंट और कटरा बाजार में स्टॉल लगाया

महार रेजिमेंट में आयोजित मेले में गोबर से बने दीपक खरीदती हुईं महिलाएं।

इस दिवाली विचार समिति की मोहल्ला विकास योजना से जुड़ी महिलाएं गोबर के बने दीये, लक्ष्मी-गणेश, शुभ लाभ, स्वास्तिक आदि सजावटी सामग्री के साथ कटरा बाजार, महार रेजिमेंट एवं अन्य स्थानों पर स्टॉल लगाकर सामग्री का विक्रय किया। गोबर से निर्मित दीयों की विशेषताएं ग्राहकों को बताते हुए पूजा प्रजापति कहती है यह दीपक इको-फ्रेंडली होते हैं। इन दीपकों को जलाने से घर में हवन की महक आती है।

इन दीपकों को जलाने से मच्छर दूर होते हैं। इन दीपकों को जलाने से वातावरण में मौजूद नकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है। इन दीपकों को जलाने से घर पवित्र होता है और मन महकता है। इन दीपकों को जलाने के बाद, इनका इस्तेमाल जैविक खाद के रूप में किया जा सकता है। इन दीपकों को जलाने के बाद, इनके अवशेषों का इस्तेमाल गमले या कीचन गार्डन में किया जा सकता है। सनातन धर्म में गाय को मां का स्थान प्राप्त है और इसके गोबर को पवित्र माना जाता है।

समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने बताया कि समिति दीयों के साथ साथ घड़ियाँ, शील्ड, बंधनवार आदि उत्पाद बना रही यह उत्पाद अनूठे है। हम सभी को प्रोत्साहन देना चाहिए। 1500 से अधिक महिलाओं का रोजगार का साधन भी बने है। आत्मनिर्भर भारत की सच्ची तस्वीर पेश करती महिलाओं के इस नवाचार से साफ हो गया है कि गोबर सिर्फ कंडे या उपले और खेतों की खाद बनाने के काम ही नहीं आता इसके और भी उपयोग हो सकते हैं। गोबर से बनने वाले उत्पादों में घड़ियाँ, स्मृति चिन्ह, पेपर वेट, माला, धूपबत्ती मूर्तियां आदि विभिन्न उत्पाद है।

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में उद्यमिता पखवाड़ा का हुआ आयोजन

उद्यमिता पखवाड़ा के अंतर्गत युवा उद्यमी को सम्मानित किया गया।

स्वावलंबी भारत अभियान के अंर्तगत शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में उद्यमिता पखवाड़ा का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में आमंत्रित मुख्य अतिथि अखिल भारतीय सह संगठक सतीश जी ने उद्यमिता विकास पर अपने विचार रखें। उन्होंने कहा राष्ट्र निर्माण में उद्यमिता ही सर्वोपरि है। अच्छे उद्यमी बनने के लिए परिश्रम सर्वोपरि मूल्य है। उद्यमिता भारत के सहज स्वभाव में है। जिस समय पर भारत विश्व उत्पाद का 34 प्रतिशत तक उत्पादन कर रहा था, तो यह स्वभाविक ही समझ में आने वाली बात है कि वह गांव-गांव में उद्यम आधारित अर्थव्यवस्था के कारण ही था। भारत ग्रामोद्योग आधारित अर्थव्यवस्था रहा है। तभी बड़ी मात्रा में अर्थ का सृजन संभव हुआ। नौकरी की मानसिकता और रोजगार यानि जॉब का विचार, तो अंग्रेजों के शासन काल में ही भारत का विमर्श बना है। आज भारत का सामान्य नवयुवक चाहे वह आईटीआई में पढ़ता हो, या किसी अच्छे आईआईटी में, वह नौकरी की मानसिकता ही पाले बैठा है। इस विषय में उनके प्रमाण में फर्क हो सकता है, दिशा में नहीं। उन्होंने उद्यमिता के महत्व को भी समझाया।

स्वाबलंबी भारत अभियान प्रांत सह समन्वयक कपिल मलैया ने सम्बोधित करते कहा कि बेटियों को शिक्षित तथा आत्मनिर्भर होने से ही देश को विकसित, सर्वांगीण विकास संभव है। सही मायनों में नारी सशक्तिकरण तभी हो पाएगा जब उनको आत्मनिर्भर बनाया जाएगा। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षित करने के साथ स्वरोजगार भी मुहैया कराने की जरूरत है। कार्यक्रम में स्वदेशी जागरण मंच एवं स्वावलंबी भारत अभियान के उद्देश्य एवं 37 करोड़ स्टार्टअप्स का देश पुस्तक का विमोचन हुआ।

इस अवसर पर नगर विधायक शैलेन्द्र जैन, शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. आनंद तिवारी, स्वावलंबी भारत अभियान जिला संयोजक राजकुमार नामदेव, सह समन्वयक करण श्रीवास्तव, प्रांत पूर्ण कालिक प्रजातंत्र गंगेले, सौरभ रांधेलिया, अखलेश समैया, नितिन सोनी, जिला पूर्ण कालिक कार्यकर्ता रविंद्र ठाकुर आदि उपस्थित रहे।

हथकरघा उद्योग अपनी बेहतरीन कारीगरी के लिए विश्व स्तर पर जाना जाता है

विचार हथकरघा केंद्र में महिलाएं कपड़े बनाते हुए।

स्वदेशी वस्त्रों एवं स्वरोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विचार समिति हथकरघा का संचालन कर रही है। हथकरघा केंद्र से 30 महिलाओं को निरंतर स्वरोजगार प्राप्त हो रहा है। हाथ से बने वस्त्र कोमल, सुंदर ड्रेपिंग, सुखदायक, जीवंत रंगों की एक श्रृंखला महिलाओं के साथ गहराई से जुड़ने वाली खुशी की भावना पैदा करते है। यह कपड़ें भारतीय परम्पराओं, त्योहारों और उत्सवों के साथ गहराई से जुड़े हैं। हाथ से बने कपड़ों को बनाने की कला सदियों से चली आ रही है। हथकरघा भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसके 70% से अधिक बुनकर और संबद्ध श्रमिक महिलाएँ हैं।

हस्तनिर्मित और हाथ से बुने कपड़े बनाने एवं अनूठी कलात्मकता के कारण सामान्य कपड़ों के मुकाबले विशेष होते हैं। यह एक बहुमुखी कपड़ा है, जो गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म होता है। भाग्यश्री राय कहती है बाज़ार में लागत ही मुख्य घटक है, इसलिए हाथ से किए जाने वाले श्रम और समय लेने वाली उत्पादन प्रक्रियाओं के कारण हथकरघे आम तौर पर अधिक महंगे होते हैं। हथकरघा हर धागे में पारंपरिक कलात्मकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हथकरघा का समर्थन करके, जागरूक उपभोक्ता स्थानीय कारीगरों और समुदायों को सशक्त बनाते हुए भारत की स्वतंत्रता-पूर्व समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देते है। आज हम सभी को यह समझना चाहिए कि हथकरघा उत्पाद खरीदकर कोई व्यक्ति सीधे तौर पर स्थानीय बुनकरों और कारीगरों की मदद कर सकता है, जिनमें से कई आर्थिक रूप से वंचित समुदायों से आते हैं। हथकरघा चुनकर कोई व्यक्ति इन पारंपरिक शिल्पों को संरक्षित करने में भी मदद कर सकता है। हथकरघा से बने वस्त्रों में धोती-पंचा, कुर्ता, साड़ी, शर्ट के कपड़े, तौलिया, टाविल, शॉल, चादर रंग-बिरंगे बनाये आदि है। बुनकर अंजना पटेल, पिंकी पटेल, गीता, रचना पटेल, दीप्ती पटेल आदि निरंतर कार्य कर रहे है।

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए निताई प्ले स्कूल ग्राम मनेसिया में दे रहा अपनी सेवाएं

ग्राम मनेसिया में निताई प्ले स्कूल द्वितीय कक्षा के बच्चे।

भारत के ग्रामीण क्षेत्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति के हमेशा केंद्र रहे हैं। आज वर्तमान समय में भी भारत की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है। इस समय भी भारत के ग्रामीण क्षेत्र का मुख्य कार्य कृषि पर ही निर्भर है। भारत की आजादी से पहले भी ग्रामीण समाज में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया जाता था। शिक्षा मनुष्य के जीवन के विकास का प्रमुख आधार होता है। शिक्षा के माध्यम से ही एक व्यक्ति अपना और देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकता है। एक शिक्षाविहीन व्यक्ति न ही अपना जीवन सही से व्यतीत कर पाता है और न ही वह अपने मौलिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो पाता है। लेकिन एक शिक्षित व्यक्ति सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक ज्ञान को प्राप्त कर न केवल अपना जीवन का साकार करता है बल्कि दूसरे लोगों का भी मार्गदर्शन करता है।

प्राचार्य साक्षी दांगी कहती है कि ग्रामीण शिक्षा में आने वाली बाधाओं में सबसे पहले, कम आय के कारण शिक्षा एक दूसरे दर्जे पर जगह दी जाती है। उच्च शिक्षा के लिए उपयुक्त कॉलेजों की कमी, सुविधाओं की कमी, शिक्षक अक्सर अयोग्य होते हैं या स्कूल नहीं आते, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा की गुणवत्ता कम होती है। इसके परिणामस्वरूप छात्रों की स्कूल में शामिल होने या वहाँ जाने की प्रेरणा कम हो जाती है। उचित मार्गदर्शन का अभाव, लैंगिक असमानता आदि बहुत चुनौतियां है। जिनके कारण बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है। आज के आधुनिक और जहां प्रौद्योगिकी निरंतर विकसित हो रही है, हर किसी को नवीनतम तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल बनाए रखते हुए बच्चों को बेहतर शिक्षा दे पाये। शिक्षक खुशबू कहती है कि अभिभावक हमसे आकर कहते है कि हमारे बच्चे वह सब इतनी छोटी उम्र में सीख रहे जो हम बड़ी उम्र भी नहीं सीख पा रहे है। शिक्षक रागनी कहतीं है कि नई शिक्षा नीति के अनुसार बच्चों को पढ़ाया जा रहा है। बच्चों को अभी से सरल से कठिन ज्ञान की ओर बढ़ाना है।

सागर में दूसरी बार 22 दिसम्बर से ग्यारह दिवसीय स्वदेशी मेला पी.टी.सी. मैदान में लगने जा रहा है

पिछले वर्ष फरवरी माह में स्वदेशी मेला की एक झलक।

संस्कृति और परंपराओं की धरोहर तथा औद्योगिकीरण की दौड़ में तेजी से आगे बढ़ रहे मध्य प्रदेश के सागर जिले में स्वदेशी मेले का आयोजन किया जा रहा है। सन् 1999 से देशभर में आयोजित हो रहे स्वदेशी मेलों की श्रृंखला में इसी वर्ष 2024 के फरवरी माह में सागर शहर में सफलतम स्वदेशी मेले का आयोजन हुआ।

स्वदेशी मेला भारतीय उद्यमियों के लिए नए व्यावसायिक अवसर उपलब्ध कराता है। विगत 20 वर्षों में यह मेला भारतीय उत्पादकों, ग्रामीण, कुटीर , निजी, सहकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए लाभकारी व्यापार उपक्रम के रूप में उभरा है। स्वर्णिम भारतवर्ष फाऊंडेशन अपनी स्थापना के बाद से देश भर में आयोजित 338 से अधिक स्वदेशी मेलों में उद्यमिता विकास, व्यापार एवं उद्योग से जुड़े विषयों पर सेमिनार आयोजित करता आ रहा है। भारतीय उत्पादों में गुणवत्ता विकास और उन्हें बेहतर चयन की सुविधा प्रदान करने का यह उपक्रम है।

स्वदेशी मेला भारतीय उत्पादकों और उद्योगों को मजबूती प्रदान करता है। स्वर्णिम भारत फाऊंडेशन अपने विभिन्न आयामों के अंतर्गत आरोग्य मेला, बनवासी मेला, विज्ञान मेला, ग्राम भारत खादी ग्राम उद्योग मेला का सफल आयोजन पूरे देश भर में कर चुका है। इस प्रयास में आप सादर आमंत्रित हैं।

स्वदेशी मेला का आयोजन 22 दिसंबर 2024 से 1 जनवरी 2025 तक पीटीसी ग्राउंड, पहलवान बाबा मंदिर के पास पुनः आयोजित किया जा रहा है। इस मेले में रियल एस्टेट, हैंडीक्राफ्ट्स, ब्रांड इंडिया, ऑटोमोबाइल, बिजनेस मीट, हैंडलूम, हर्बल प्रोडक्ट्स, इंडियन फूड्स के साथ स्थानीय उत्पादन अपनी सहभागिता करेंगे।

हमारे सहयोगी

O.P. Jindal Global University
A Private University Promoting Public Service

TISS
Tata Institute Of Social Sciences

UPES
UNIVERSITY OF THE FUTURE

BHU
Banaras Hindu University

QUEST ALLIANCE

Goodera

ConnectAID
The International Solidarity Network

learning initiatives for india

meraadhikar
one nation. one platform

Lyvefresh®

TechPose

BENNETT UNIVERSITY
TIMES OF INDIA GROUP

ACADEMIA FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT

POLICY RESEARCH FOUNDATION
PRF

NCD NAVJIVAN CENTER FOR DEVELOPMENT
We Design Your Growth Story

danamojo
experience the magic of giving

IIMT
GROUP OF COLLEGES
Greater Noida • Meerut
— Aim For Excellence —

Dr. H.S. Gour University
Sagar [M.P.]

THE ART OF LIVING

Rotary
Club of Sagar

STEP-AHEAD
Fellowship Preparation–Support
MGNF, Gandhi Fellow, Urjaan Fellow, SBI Youth, TFI etc.

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT
ROHTAK

भारत विकास परिषद
Bharat Vikas Parishad
Sagar [M.P.]

ISRN

Edu-Vitae
Services
JOIN! LEARN! ACHIEVE!

India is us!
I2u Social Foundation

संजीवनी बाल आश्रम

For HER Foundation
Hygiene | Empowerment | Respect

विचार समिति
(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्र में दान देकर इस मुहिम को आगे बढाने में सहयोग करें ।
दान राशि बैंक खाते में डालने हेतू जानकारी इस प्रकार है ।

Bank - State Bank of India
Bank A/c Name - Vichar Samiti
Account No. - 37941791894
IFSC Code - SBIN0000475

Paytm/Phonepe/Googlepay आदि से दान करने के लिए QR कोड को स्कैन करे ।

PhonePe
Scan & Pay with any UPI App
UPI ID : Q509009353@ybl
BHIM | UPI
Vichar Samiti

-: संपर्क :-

+91 95757 37475
linkedin.com/in/vichar-samiti
samiti.vichar@gmail.com
www.vicharsamiti.in
Sagar, Madhya Pradesh India

संपादक - आकांक्षा मलैया, प्रबंधक व प्रकाशक - विचार समिति, स्वामित्व - विचार समिति, 258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड, आदिनाथ कार्स प्रा.लि. के पीछे, सागर (म.प्र.), पिन-470002
मुद्रण - तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट, पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली, रामपुरा वार्ड, सागर